P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कला एवं विज्ञान संकाय के डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन

विभा मिश्रा
प्राचार्य
डी.पी.विप्र शिक्षा महाविद्यालय
बिलासपुर (छ.ग.) भारत

अरविन्द कुमार यादव
सहायक प्राध्यापक(HOD)
शिक्षा शास्त्र विभाग,
डी.एल. एस. स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, सरकण्डा
बिलासपुर (छ.ग.) भारत

पवन सिंह राजपुत
प्रशिक्षार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
डी.पी.विप्र शिक्षा महाविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.) भारत

सारांश

अभिवृत्ति मनुष्य की वह सामान्य प्रतिक्रिया है, जिसके द्वारा वस्तु का मनोवैज्ञानिक ज्ञान होता है। अभिवृत्ति मनुष्य की एक अर्जित गुण है। उसकी अभिवृत्ति किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान एवं समस्या के प्रति जन्म के समय न तो अनुकूल होती है और न प्रतिकूल। लेकिन आयु में वृद्धि होने के साथ अनुभव तथा शिक्षण के कारण अनुकूल या प्रतिकूल, सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति का निर्माण हो जाता है। व्यक्तिगत अनुभव तथा शिक्षण के साथ–साथ विद्यालयीन, पारिवारिक एवं सामाजिक कारकों का प्रभाव भी अभिवृत्ति के विकास पर सामान्य रूप से पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन में भी शोधकर्ता द्वारा भी यही पाया कि कला एवं विज्ञान संकाय के प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में अंतर पाया गया है। साथ ही अन्य पूर्व के अध्ययनों में भी देखा गया है कि परिवार, समाज एवं समुदाय के सदस्यों की अभिवृत्ति में भी कुछ न कुछ भिन्नता पायी जाती है।

मुख्य शब्द : अभिवृत्ति, सर्वांगीण, मान्यताओ, परिवेश,अनुक्रिया, प्रत्यक्षीकरण, संवेगात्मक, तंत्रिकीय, सम्प्रत्यय, मनोवृत्ति, यादृच्छिक ।

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के विकास का ही दूसरा नाम है। इन शक्तियों द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। कुछ विद्वानों के अनुसार शिक्षा देने एवं ज्ञान देने में कोई अन्तर नहीं है, किन्तु यह धारणा आज भ्रममूलक सिद्ध हो चुकी है, क्योंकि 'शिक्षा' एक प्रक्रिया द्वारा सम्पन्न उपलब्धि है। शिक्षा केवल ज्ञान देने तक ही सीमित नहीं है। शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती।

प्लेटों के अनुसार – "शिक्षा श्रेष्ठ नागरिकों के निर्माण का साधन है।"

अभिवृत्ति

हमारी अभिवृत्तियाँ प्राथमिक रूप से सामाजिक प्रभावों से उत्पन्न होती है। जन्म से ही मानव ऐसी सामाजिक संस्थाओं के जॉल में उलझ जाता है, जो भौतिक जगत के रूप में उसके परिवेश का निर्माण करती है। प्रथम सामाजिक इकाई के रूप में परिवार का किसी व्यक्ति के अभिवृत्ति निर्माण पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। यही कारण है, कि बाद में प्राप्त होने वाले अनुभवों को आसानी से अभिवृत्तियों में बदल नही सकते क्योंकि अभिवृत्तियाँ व्यक्तियों समूहों और अन्य सामाजिक वस्तुओं के प्रति हमारी अनुक्रियाओं को एक संगति प्रदान करती है।

थर्सटर के अनुसार – "अभिवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु से संबंधित धनात्मक अथवा ऋणात्मक भाव है।"

अभिवृत्ति की प्रकृति

अभिवृत्ति के निर्माण में व्यक्ति के व्यवहार के प्रत्यक्षात्मक, संवेगात्मक, प्रेरणात्मक तथा क्रियात्मक पक्ष निहित रहते है।

1. अभिवृत्ति धनात्मक अथवा ऋणात्मक भी हो सकती है।
2. अभिवृत्ति परिस्थिति, योजना, व्यक्ति, वस्तु से संबंधित होती है।
3. अभिवृत्ति में समय–समय पर परिवर्तन हो सकता है।
4. अभिवृत्ति के विकास पर प्रत्यक्षीकरण तथा संवेगात्मक कारको का प्रभाव पड़ता है।
5. अभिवृत्ति व्यक्तिगत होती है, किसी एक ही घटना अथवा वस्तु के प्रति अलग–अलग व्यक्तियों की अभिवृत्ति में अंतर होता है।

अभिवृत्ति की विशेषताएँ

अभिवृत्ति की विभिन्न परिभाषाओं के विश्लेषण से इसका स्वरूप बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है। अभिवृत्ति के स्वरूप के सम्बन्ध में इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ महत्वपूर्ण है–

1. अभिवृत्ति एक मानसिक एवं तंत्रिकीय अवस्था है।
2. अभिवृत्ति प्रतिक्रिया करने की एक तत्परता है।
3. अभिवृत्ति एक मध्यवर्ती संप्रत्यय है।
4. अभिवृत्ति एक जटिल संप्रत्यय हैं।

अभिवृत्ति का विकास तथा निर्माण

अभिवृत्ति मनुष्य का एक अर्जित गुण है। उसकी अभिवृत्ति किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, या समस्या के प्रति जन्म के समय न तो अनुकूल होती है और न प्रतिकूल। लेकिन, आयु में वृद्धि होने के साथ अनुभव तथा शिक्षण के कारण अनुकूल या प्रतिकूल, सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति का निर्माण हो जाता है। व्यक्तिगत अनुभव तथा शिक्षण के साथ–साथ पारिवारिक एवं सामाजिक कारकों का प्रभाव भी अभिवृत्ति के विकास पर सामान्य रूप से पड़ता है। इस सम्बन्ध में किये गये अध्ययनों तथा शोधों से मनोवृत्ति के विकास एवं निर्माण के निम्नलिखित निर्धारकों या कारकों का उल्लेख मिलता है–

1. समूह – सम्बद्धता
2. प्रदर्शित सूचना
3. सामाजिक सीखना–कारक
4. उत्तेजना–पुनरावृत्ति तथा परिचितता

अभिवृत्ति–परिवर्तन

अभिवृत्ति एक अर्जित गुण है। अतः इसमें परिवर्तन होना स्वभाविक है। पुरानी अभिवृत्ति का बदलना तथा नई अभिवृत्ति का बनना सदा जारी रहता है। अभिवृत्ति में निम्नलिखित दो प्रकार के परिवर्तन होते है–

1. मात्रात्मक परिवर्तन
2. दिशात्मक परिवर्तन

अध्ययन की आवश्यकता

अध्ययन की आवश्यकता निम्न है–

1. डी.एल.एड. के प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्रशिक्षण देने का तरीका एक जैसा है या नहीं है।
2. पाठ्यक्रम शिक्षण विधियां पढ़ाने का तरीका भी प्रायः एक जैसा होता है।
3. डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण का उत्तम लाभ कैसे ले।
4. डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थी का शिक्षण के प्रति उनकी अभिवृत्ति का ऋणात्मक से धनात्मक कैसे किया जाए।
5. डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण के दौरान अपने कार्य का उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से निर्वाह नहीं करते इसका कारण क्या हो सकता है।
6. शिक्षण कार्य की प्रति उनकी अभिवृत्ति को कैसे परिवर्तन की जाए।

समस्या कथन

"कला एवं विज्ञान संकाय के डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन "

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के अंतर्गत निम्न उद्देश्यों की रचना की गई :–

1. कला संकाय एवं विज्ञान संकाय के डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

HO_1 – कला संकाय एवं विज्ञान संकाय के डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थी

डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों से तात्पर्य बिलासपुर शहर में स्थित शासकीय व अशासकीय शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों से है।

अभिवृत्ति

अभिवृत्ति एक प्राणी की किसी एक विषय व व्यक्ति के प्रति एक विशेष अर्जित अनुभव स्थरीकृत संवेगात्मक प्रवृत्ति होती है। किसी भी मनोवैज्ञानिक, तथ्य, वस्तु, व्यक्ति के प्रति हमारी सोच या विश्वास ही हमारी अभिवृत्ति है।

अध्ययन का परिसीमन

अध्ययन का परिसीमन का तात्पर्य है समस्या के अध्ययन क्षेत्र को सीमित करना। अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रतिदर्श को कुछ निश्चित क्षेत्रों तक ही सीमित रखता है जो निम्न है–

क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन में बिलासपुर जिले के डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थानों तक ही सीमित है। यह अध्ययन बिलासपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय शिक्षा संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों से सम्बंधित है इस अध्ययन में कला एवं विज्ञान संकाय के शिक्षक प्रशिक्षार्थियों को लिया गया है। छत्तीसगढ़ के जिला बिलासपुर शहर के प्रशिक्षण संस्थानों में चार डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थानों का द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में शिक्षक प्रशिक्षार्थियों का चयन किया गया है।

न्यादर्श

शोधकार्य के उद्देश्य की पूर्ति के लिए छत्तीसगढ़ में जिला बिलासपुर शहर के शिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों का चयन किया है, जिसमें प्रशिक्षार्थियों के उनके शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन कर सके। डी.एल.एड. में कुल 499 में से 80 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया, जिनमें 40 कला संकाय के प्रशिक्षार्थी व 40 विज्ञान संकाय के डी.एल.एड प्रशिक्षण स्थानो के प्रशिक्षार्थियों का चयन किया गया है।

प्रतिचयन विधि

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक विधि का चयन किया गया है क्यों कि इस विधि द्वारा न्यादर्श में से प्रत्येक के चुने जाने की समान संभावना रहती है इसमे न तो समष्टि को स्तर में बांटा जाता है न ही शोधार्थी की सुविधा का ध्यान रखा जाता है। इसलिए न्यादर्श के लिए यादृच्छिक विधि का चयन किया गया है।

संकाय के आधार पर न्यादर्श वितरण

संकाय का नाम	प्रशिक्षार्थियों की संख्या
कला	40
विज्ञान	40

चरांक

1. स्वतंत्र चर :– डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थी
2. आश्रित चर :– शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति
3. नियंत्रित चर :– कला संकाय एवं विज्ञान संकाय के प्रशिक्षार्थी

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोधकर्त्ता द्वारा शिक्षक प्रशिक्षार्थियों की अभिवृत्ति मापन के लिए डॉ. एस.पी. आहलूवालिया द्वारा निर्मित अभिवृत्ति मापन अनुसूची का उपयोग किया गया है। यह 90 अभिवृत्ति कथन 6 उपमापनी में विभाजित हैं प्रत्येक उपमापनी मे 15 कथन हैं। 90 कथनों में से 56 धनात्मक एवं 34 ऋणात्मक कथन है।

परिकल्पना का परीक्षण

HO_1 – कला संकाय एवं विज्ञान संकाय के डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

कला एवं विज्ञान संकाय डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों के शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य अन्तर की सार्थकता

क्रमांक	संकाय	संख्या	मध्यमान	मानक विचन	'टी' का मान	परिणाम
1	कला संकाय	40	253	23.28		
2	विज्ञान संकाय	40	244	23.27	1.73	सार्थक है

व्याख्या

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि कला संकाय के डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों के शिक्षण अभिवृत्ति TAI से प्राप्त अंको का मध्यमान– M = 253 है जो विज्ञान संकाय के डी. एल.एड. प्रशिक्षार्थियों के शिक्षण अभिवृत्ति TAI से प्राप्त मध्यमान– M = 244 से अधिक है अतः मध्यमान के आधार पर कला संकाय डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों की अभिवृत्ति विज्ञान संकाय के डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों की अभिवृत्ति से अधिक हैं।

उपरोक्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता t = test, से ज्ञात की गई। कला एवं विज्ञान संकाय डी.एल. एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का df = 78 के मान के लिए t = 1.73 से प्राप्त हुआ। .05 स्तर df = 78 के मान के लिए t का मान 1.99 है स्पष्ट है कि गणना द्वारा t का मान 1.73, .05 सार्थकता स्तर पर t का मान 1.99 से कम है अतः परिकल्पना क्र. HO_1 को स्वीकृत करते हुए यह कहा जा सकता है, कि कला संकाय डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं विज्ञान संकाय के डी. एल.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

प्राप्त परिणाम से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि कला एवं विज्ञान संकाय के डी.एल.एड. प्रशिक्षार्थियों के शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया क्यों कि आज के समय में कला तथा विज्ञान दोनो के प्रशिक्षार्थी अपने अपने शिक्षा से संबंधित उद्देश्यों के प्रति सचेत है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

पाठक, पी.डी. : "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2011

सुलैमान मुहम्मद : "उच्चतर समाज मनोविज्ञान", मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2009

कपिल, डॉ. एच.के. : "अनुसंधान विधियों", भार्गव बुक हाऊस, आगरा, 2010

अस्थाना, डॉ. विपिन : "मनोविज्ञान एवं शिक्षण में मापन एवं मूल्यांकन"

अस्थाना, डॉ. विपिन : "शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी", अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, 2008–2009

शर्मा, डॉ. आर.ए. : "शिक्षा और मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन" मेरठ इंटरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस 2013

सरीन एवं सरीन : "शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ", विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ 122, 114, 123

कौल, लोकेश : "शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली का विकास", पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली